दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001

(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)

सम्बद्ध

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 30.08.2022

प्रकाशनार्थ

30 अगस्त, 2022 गोरखपुर। दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर में ब्रह्मलीन महंत दिग्विजय नाथ स्मिथ व्याख्यानमाला के छठे दिन विज्ञान संकाय द्वारा आयोजित **''भारतीय शिक्षा प्रणाली एवं संस्कृतिक मूल्य बोध''** विषय पर विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए **मुख्य अतिथि मेजर जनरल अतुल बाजपेयी कुलपति, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय बालापार, गोरखपुर** ने कहा कि प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली भारतीय संस्कृति की संवाहक है। प्राचीन शिक्षा पद्धति भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन का मार्ग प्रशस्त करती है। यह शिक्षा गुरुकुल के माध्यम से प्रदान की जाती थी जिसमें अभिजात्य वर्ग एवं कमजोर वर्ग दोनों को समान शिक्षा प्रदान की जाती थी। मध्यकाल में नालंदा, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय ने प्राचीन शिक्षा पद्धति की निरंतरता को बनाए रखा। मुगल काल में भारतीय शिक्षा पद्धति का पतन हुआ और अंग्रेजी शासनकाल में प्राचीन शिक्षा पद्धति पतनोन्मुख होती चली गई जिसमें लॉर्ड मैकाले जैसे लोगों की अहम भूमिका रही है।

अँग्रेजी शासन काल में प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति को पुनः स्थापित करने का कार्य महंत दिग्विजय नाथ जी ने किया। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उन्होंने पूर्वी उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में 1932 में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना की। इस परिषद के तहत शिक्षण संस्थान अध्यात्म, विज्ञान एवं कला के क्षेत्र में राष्ट्रीय भावना को केंद्र में रखकर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। ये संस्थाएं ऐसे नागरिकों को तैयार कर रही हैं जिनके आचरण में राष्ट्रीयता सम्मिलित हो और राष्ट्र की एकता व अखंडता के लिए आत्मोत्सर्ग करने को तैयार हो।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो ओमप्रकाश सिंह ने शिक्षा के चार स्वरुप– संस्कार मूलक शिक्षा, विचार मूलक शिक्षा, रोज़गार मूलक शिक्षा एवं बाजार मूलक शिक्षा की बात कही जिसमें संस्कार मूलक शिक्षा के साथ साथ रोजगारपरक शिक्षा भी हमारी संस्थाएं दे रहीं हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि संस्कार मूलक शिक्षा से राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण होगा और रोजगारपरक शिक्षा से राष्ट्र आत्मनिर्भर बनेगा। यद्यपि बाजारवादी संस्कृति से हमारी संस्कृति प्रभावित हो रही है, फिर भी महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा संचालित संस्थाएं अपनी प्राचीन संस्कृति और शिक्षा को स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रही हैं। उन्होंने यह भी कहा कि विभेदकारी शिक्षा विभेद पैदा करती है जिससे समाज में असमानता बढ़ती है। हमारी संस्थाएं समतामूलक शिक्षा प्रदान कर रही हैं जिससे समरस समाज की स्थापना सम्भव हो सकेगा।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. अनिता कुमारी एवं स्वागत भाषण प्रो. परीक्षित सिंह ने किया। कार्यक्रम में डॉ. शशिप्रभा सिंह, श्री धर्मचन्द्र विश्वकर्मा, डॉ. नितेश शुक्ला, डॉ. मनीष श्रीवास्तव, श्री हिमाशुं यादव, श्री इन्द्रेश पाण्डेय, डॉ. आर.पी.यादव सहित महाविद्यालय के समस्त शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारी तथा छात्र–छात्राएँ उपस्थित रहें।

डॉ.(शैलेश कुमार सिंह)
प्रभारी
सूचना एवं जनसम्पर्क